International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 42-46

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 42-46
www.allresearchjournal.com
Received: 15-11-2018
Accepted: 18-12-2018

सुनीता वर्मा
एक्टेंशन लेक्चरर हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़, हरियाणा, भारत।

Correspondence
सुनीता वर्मा
एक्टेंशन लेक्चरर हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़, हरियाणा, भारत।

मनीषा कुलश्रेष्ठ कहानी संग्रह 'गन्धर्व – गाथा' धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना एक व्यावहारिक विवेचन

सुनीता वर्मा

सारांश
भारतीय सामाजिक जीवन का मुलाधार 'धर्म' है भारतीय जनजीवन धर्म से अनुप्राणित और संचालित होता रहा है 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है– 'धारण करना, बनाये रखना अथवा पुष्ट करना'।
प्रारम्भ से ही भारतीय जनसमुदाय धार्मिक आडम्बरों एवं अंधश्रद्धाओं का शिकार बनता आया है। स्वार्थी शासकों एवं पाखण्डी ऋषि, आचार्य आदि की कुनीतियों और दुष्प्रवृतियों के कारण पूरा समाज धार्मिक आडम्बरों एवं अंधश्रद्धाओं के जाल में उलझा हुआ था प्रारम्भ से ही भारत में धर्म और राजनीति की साँठ – गाँठ होती रही है। कभी शासक धार्मिक सद्भावना का दुरूपयोग कर अपने शासन को निष्कंटक बनाने की कोशिश करता था तो कभी ऋषि आचार्य जैसे धार्मिक व्यक्ति शासकों से अपना सम्बन्ध स्थापित करके अपने स्वार्थ की पूर्ति करना चाहते है। मनीषा जी ने भी अपनी कहानी संग्रह 'गन्धर्व गाथा' मे इसी प्रकार के धार्मिक पाखण्ड़ एवं अंधश्रद्धा और धर्म व राजनीति का व्याख्यान किया है।

मूल शब्द: धार्मिक कट्टरता, औपचारिकता, ग्लोबलाइजेशन, संस्कृति, वर्चस्ववादी इत्यादि।

प्रस्तावना
साहित्य समाज का दर्पण माना गया है । वह जनमानस की अन्तर्बाहय प्रतिछवियों का प्रकाशन करने वाला ज्ञान – राशि का संचित कोश है, अतः वह किसी देश का प्रकाशन करने वाला ज्ञान – विशेष को या समाज–विशेष को जीवन्त करने की कोशिश करता है। इस कोशिश के अन्तर्गत वह लक्ष्य समाज के मानव जीवन एवं उसकी विभिन्न समस्याओं को अभिव्यक्ति देना चाहता है उस समाज – विशेष की सामाजिक या राजनीतिक समस्याओं का वर्णन करते समय कहानीकार उसके सांस्कृतिक जीवन की उपेक्षा नही कर सकता।
''वह उस समाज की विभिन्न जातियों एवं उनके रहन – सहन, खान – पान, वेशभूषा, संगीत, कला, शिक्षा, साहित्य, धर्म आदि अनेकानेक पहलुओं का चित्रांकन करता है,''[1] उनसे सम्बन्धित मान्यताओं और समस्याओं को अभिव्यक्त करता है इस प्रकार कहानीकार का लक्ष्य समाज के सांस्कृतिक जीवन का चित्रांकन करना होता है। आधुनिक हिन्दी कहानीकार श्री 'मनीषा कुलश्रेष्ठ' ने अपनी कहानियों के अन्तर्गत समाज के धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है।
समाज की समकालीन तथा उसकी मांगो के प्रति सचेत कवियों के लिए परम्परा का सांस्कृतिक प्रवाह उनके व्यक्तित्व को तथा उनके सम्पूर्ण कृत्तित्व को प्रभावित करने वाली सबसे बडी शक्ति होती है जन् – संस्कृतियों की उमंगों के साथ तादात्म्य का अनुभव करने वाला कोई कवि जनता की सांस्कृतिक परम्परा से पृथक रहकर अथवा इसकी आवश्यकताओं की परिगणना किए बिना अपने अस्तित्व को सार्थक नही रख सकता। 'संस्कृति' शब्द कहते ही हमे ग्रामीणता का बोध होता है क्योंकि ग्रामीण जीवन मे ही भारतीय संस्कृति का मूल रूप विद्यमान है इसी सन्दर्भ में सुभाषिनी शर्मा में लिखा है कि – ''भारतीय संस्कृति का मूल या वास्तविक रूप ग्राम जीवन ही उपलब्ध होता है संस्कृति ही वह चेतना है जिसके द्वारा व्यक्ति ज्ञान, कला, नैतिकता, प्रथा–परम्पराये आदि के सम्बन्ध में सीखता है।''[2]
''वेश – भूषा का सम्बन्ध देश की सभ्यता – संस्कृति से होता है, क्योंकि देशगत विभिन्नता के साथ सभ्यता और संस्कृति बदलती है, जिससे वेशभूषा मे भी अन्तर आ जाता है इसलिए कहा जाता है कि जैसा देश वैसा वेश।''[3] मनीषा जी ने स्वांग कहानी में गफूरिया की बहुरूपियाँ लोककला के माध्यम से राजस्थानी वेश – भूषा के प्रति अपनी सजगता को व्यक्त किया है कैसे गफूरिया अलग–अलग प्रकार की वेश – विन्यास के द्वारा अलग – अलग स्त्री – पुरूष के किरदारों मे नजर आते है कहानीकार मनीषा जी ने अपनी कहानी स्वांग मे विशेषकर राजस्थानी समुदायों की वेश –

भूषा एवं श्रृंगार प्रसाधनों का उल्लेख कर युग – विशेष को जीवन्त कर दिखाने का सफल प्रयत्न किया है।

भारत विभिन्न संस्कृतियों से बना हुआ देश है हर समाज की अपनी संस्कृति होती है हर अंचल की अपनी विशेषताएं है, जिसमें ''संस्कृति के मूलभूत तत्व धर्म, दर्शन, संस्कार, नदी, तीर्थ, पूजा, त्यौहार, कलाएं, प्रथाएं, परम्पराएं आदि समाहित होते है।''[4] इन अंगो को समाजिक जीवन मे विशेष महत्व दिया जाता है। यह समय यह काल, जिसमें हम रह रहे है, मानव सभ्यता के पूरे इतिहास मे सबसे अधिक जटिल काल है कि इस काल में कुछ भी स्थिर नही है। न मूल्य, न आदर्श, न जीवन पद्वति, सांस्कृतिक छवियाँ, आचार–विचार, रहन–सहन, मानवीय व्यवहार कुछ भी स्थिर नही है।

उदारीकरण ओर उपसंस्कृति ने भारतीय सामाजिक संरचना को बाहर से भीतर तक प्रभावित किया है जीवन और समाज आधुनिकता के रंग मे पूरी तरह सराबोर है जिसमें पाश्चात्य जीवन शैली, आडम्बर और विलासितापूर्ण सामग्रियों से सुसज्जित बाजार व घर में मनुष्य अपना जीवन ही नही बल्कि अपना हर दिन किसी तरह से काट रहा है भाग – दौड, औपचारिकता ही शेष रह गयी है। ठीक इसी तरह की औपचारिकता 'गन्धर्व गाथा' कहानी संग्रह में 'स्वांग' कहानी में लेखिका ने दिखायी है यू ंतो 'स्वांग' कहानी साधारण लोगों की कहानी है 'बहुरूपियाँ' जो एक 'लोककला' है पर आधारित है कहानी का नायक गफूरिया जो अपनी लोककला को जीवित रखने मे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देता है चूंकि लेखिका राजस्थान की रहने वाली है अतः उनकी अधिकतर कहानियों मे वहॉ के सांस्कृतिक परिवेश को बेहद सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करती है। लोकरंग मे सजी एक ऐसी ही कहानी स्वांग का गफूरिया एक ऐसा उच्च चरित्र जो हम तोडती लोक कलाओ के लिए फ्रीक कहे जा सकते है। लेखिका ने अपनी इस कहानी मे राजस्थानी वेश – भूषा, खान – पान एवं नारी सम्मान के बारे में विस्तार से बताया है 'स्वांग' कहानी का नायक अपने समुदाय सहित सभी उपेक्षित लोक कलाकारों की विडम्बना का प्रतीक है कलेक्टर द्वारा ये कहना कि– ''ऐसे – ऐसे कलाकार, जिनकी बूढ़ी, मरती हुई कलाओं का कोई नामलेवा तक नही जिनके बच्चों तक ने उनकी कला को बेकार समझ कर छोड रखा है''[5] तो एक तरह से गफूरिया जैसे 'बहुरूपियाँ' द्वारा अपनी 'लोक कला संस्कृति' की समाज परिवार के लोगो द्वारा मिला नकारात्मक रवैया उनकी लोककला को क्षतिग्रस्त करते है। इसी तरह से लेखिका ने इस कहानी में गफूरिया और एक रिक्शे वाला के माध्यम से हिन्दू – मुस्लिम के मन्दिर – मस्जिद के आपसी वैरभाव के धार्मिक कट्टरता का वर्णन किया है कि अगर हिन्दू – मुसलमानों के मस्जिद वाले इलाके में और मुसलमान हिन्दुओं के इलाके मे चले जाते है तो कैसे ईंट – भाटे बरसने लगते है रिक्शे वाले का गफूरिया को ये बताना कि ''मैने तो कोई जनेउ नही लगा रखी, न गेरू–टीका, मै ठहरा गरीब नीच जात का मजदूर, फिर वो मुझे कैसे हिन्दू समझ जाते है?''[6] पिछली बार जब मै इस इलाके मे आया तो मेरे सिर पर एक ईंट आ पडी थी कहानी में प्रदर्शित एक ऐसी धार्मिक कट्टरता जो साधारण आम गरीब जनता का जिसमें सबसे ज्यादा शोषण होता है।

'मनीषा जी' ने 'कालिन्दी' कहानी मे 'जमना' के माध्यम से एक ऐसे प्रेम का चित्रण किया है जिसमें स्त्री – पुरूष का सम्बन्ध शर्मनाक और घृणास्पद किस्म के रिष्तों का एक उत्पीड़न भरा मिश्रण नजर आता है। विकास की तेज रफ्तार में मनुष्य का मानवीय मूल्यों से निरन्तर वंचित होते चले जाना आधुनिकता का ऐसा भीषण संकट है जिससे आज सभी प्रभावित है और केन्द्र मे है आज का युवा वर्ग, जिस पर आधुनिकता का सबसे गहरा और गम्भीर प्रभाव पडा है औपचारिक मित्रता, औपचारिक प्रेम, औपचारिक मुस्कराहट, औपचारिक संवेदना, जहाँ हृदय तत्त्व सर्वथा नदारद है और बौद्विकता व विवेकशीलता पर भी प्रश्न चिह्न लगा हुआ है समय बदलने के साथ मूल्यों मे आ रही गिरावट 'कालिन्दी कहानी' के माध्यम से उभरती है।

'कालिन्दी' कहानी मे लेखिका ने अपनी आजीविका चलाती समाज द्वारा तिरस्कृत एक 'न्यूड माडल' 'जमना' जो अपने बेटे को चाह कर भी अस गन्दे दलदल से बाहर नही निकाल पाती और निकलने की चाह मे गहरे तक घंसते जाना शायद उस समाज की अनैतिकता का ही नही अपतु भारतीय समाज की संस्कृति व सभ्यता की अनैतिकता का व्याख्यान है इस कहानी मे समाज और व्यवस्था द्वारा लाद दी गई गठरी को उतार फेकने की संघर्ष यात्रा शामिल है जहाँ उन बदनाम गलियों में हर धर्म हर मजहब से जुडे अपने परिवार बीवियों द्वारा उक्ताएं हुए लोग शामिल है। 'ग्लोबलाईजशन' के इस दौर में नयी आधुनिकता के विषैले रूप से यूँ तो सभी आक्रान्त है किन्तु अधिक दंश देश के युवाओं को ही झेलना पड रहा है। उन युवाओं को जो प्राचीन व नवीन, भूत और भविष्य को जोडने वाली महत्वपूर्ण कडी है। कुछ इसी तरह की कहानियाँ है मेरा ईश्वर यानि .....और 'एडोसिन का रक्त और लीलि के फूल' देह और प्रेम के कुहासे के बीच हंस के सम्पादकीय मे समकालीन स्त्री कथाकारों की कहानियों पर बात करते हुए 'राजेन्द्र जी' ने कहा है कि ये कहानियां वेपर्द और बेशर्म भाषा मे ''स्त्री की सेक्स दुस्साहसिकताओं का वर्णन नही, स्त्री होने के भीतर भय को निकाल पोंछने के प्रयास है। नैतिकता, मर्यादा, लज्जा के सैंकडो सालों के साथ कुंठाओ और भय को जीती स्त्री के कन्फेशन है और स्त्री लेखन की इस प्रवृत्ति को पचा पाना संस्कारवान पाठकों के लिए मुश्किल ही नही जुगुप्साजनक है।''[7]

'परजीवी' कहानी का जिसका अर्थ 'जो दूसरों पर आश्रित हो' अर्थात नारी स्वातन्त्रय जो आज आधुनिकता के भीषण दौर मे कही – कही धुंधला सा नजर आता है कही दूर – दूर तक भी दिखाई नही देता। लेखिका ने कहानी के नामकरण के साथ ही नारी की धर्म के ठेकेदारों द्वारा लादी गई बेडियों को निकाल फेंकने का प्रयास है जिसमें एक पुरूष द्वारा अपनी पत्नी को फ्रीक समझना और बिना शादी किए अपनी प्रेमिका के साथ जीवन व्यतीत करने की इच्छा एक ऐसी पुरूष मानसिकता को परिभाषित करता है जिसमें भारतीय सभ्यता व संस्कृति का आत्मदाह हुआ है समाज जिसे स्वीकार नही करता परन्तु पुरूष इसे मन मस्तिष्क में जिन्दा बनाएं रखता है अपनी काम – वासना की पूर्ति के लिए। हमारे सभी धर्मशास्त्रों में ग्रन्थों में लिखा गया है कि जिस समाज में या देश में नारियों की पूजा की जाती है वहां देवता निवास करते है तो क्या औरत को केवल एक सेक्सुयल अवयव समझना उसके आत्मबोध उसकी भावनाओं के साथ खिलवाड नही है?

इसी तरह 'खरपतवार' कहानी मे लेखिका ने भारतीय समाज के उच्चवर्ग के एक ऐसे पुरूष के चरित्र को उकेरा है जो अपनी कामकाजी पत्नी के तानों से दुखी एक सच्चे प्रेम की तलाश मे एक साधारण सी लडकी के साथ दैहिक सम्बन्धों मे आना और फिर लडकी की असामान्य मौत के प्रति उस व्यक्ति का कोई जवाबदेही न अनुभव करना एक तरह का मूल्य विहिन, नैतिकता विहिन, जिम्मेदारी विहिन, परिस्थितिवाद है जिसे पुरूष मानसिकता कभी स्वीकार नही करती। तो क्या सभ्यता, संस्कृति, धर्म के नियम कानून सभी का दायित्व केवल और केवल स्त्रियों के लिए है?

'बिगडैल बच्चे' कहानी एक मिथकीय शैली को परिभाषित करती मनीषा जी की सर्वश्रेष्ठ कहानी है ''मिथकीय शैली के अन्तर्गत रचनाकार किसी परम्परागत या प्रचलित पौराणिक कथा को आधार बनाकर युगीन समस्याओं की और इंगित करता है''[8] 'बिगडैल बच्चे' मनीषा जी की भारतीय सभ्यता व संस्कृति के पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे संस्कारो को परिभाषित करने वाली कहानी है जिसमें वो तीनों तरूण यात्री कथावाचक प्रौढ़ महिला की पुराने रीति–रिवाज व संस्कारों को जो खोखले हो गए है, को

नई परिभाषा में परिभाषित करते है क्योंकि कोई भी साहित्यकार जब मिथकीय शैली को आधार बनाकर अपने कथ्य का विषय बनाता है तब उसका मूल उद्देश्य यही रहता है कि वह अपने युग – विशेष को अभिव्यक्ति दे।

''हमारे प्राचीन आदर्श और सार्थक नैतिक मूल्य हर आने वाली पीढी को हस्तांतरित होते है। युवाओ के बारे में आज यह आम धारणा बनी हुई है।

ज्ञान, उर्जा, शक्ति व आवश्यक संसाधनों से सम्पन्न आज के युवा भारत ने जिस परम्परा और संस्कृति को अपना लिया है। उसकी जडो से उनको कोई तालमेल नही है 'अर्ध वस्त्रावृता संस्कृति' में युवाओं के सांस्कृतिक परिदृश्य को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है भारतीय परम्परा व संस्कारो को छिछले तिरस्कार से हटा कर धर्म, नैतिकता व मूल्यों को पुराना दकियानुसी मानता हुआ अंग्रेजी सोच मे जकडा युवा वर्ग बाजार और मीडियां के रचे मायाजाल मे उलझा हुआ, खोया हुआ दिशा हीनता मे ही आगे बढ रहा है।''[9]

युवाओं का पथभ्रष्ट होना आज वास्तव में सभी के लिए सोचनीय और चिन्तनीय बना हुआ है अणु शक्ति के समान शक्तिशाली युवाओं को बर्बादी के कगार पर देख कुछ न कर पाने की विवशता सभी पीढी के लोगों मे देखी जा सकती है आज के नवयुवक कितने बिगडैल है, फैशन परस्त है, इनमे समझदारी नाम मात्र को भी नही। कुछ बनने – बनाने की न तो काबिलियत है, न अम्ल, न हिम्मत। दिन पर दिन बदतमीज होते जा रहे है संस्कार बचे ही नही। किसी मुसीबत को ये समझदारी से सुलझा सकेंगे या नही। इनका खुलापन, इस कदर लापरवाही क्या इन्हें खतरों की तरफ नही धकेलती? आदि जैसी धारणाएं, चर्चाएँ करना और सुनना आम बात सी हो गयी है। सामाजिक जीवन मे समय – समय पर अनेक रूढिया बनती चलती है यदि आत्म समीक्षा के द्वारा उन रूढियों की पहचान न की जाये और उनका मूल्यांकन कर उन्हे तोडा न जाए, तो वे लम्बे समय तक बनी रह कर सामाजिक जीवन मे न केवल उथल – पुथल मचा देती है बल्कि उसके स्वाभाविक विकास को भी बाधित करती है। हम और हमारे युवा अनेक गतिशील प्रवृतियों के बावजूद भी स्थितियों की जडता का दर्द झेलने को विवश है जिसे शीघ्रातिशीघ्र तोडना अति आवश्यक है आज के भोगवादी और भौतिकवादी समय मे साहित्यिक और बौद्विक मे चिन्तन के नाम पर अनेक विमर्शों की बाढ सी आई हुई है। स्वतन्त्रता के बाद से ही सामाजिक, आर्थिक सुरक्षा, चिकित्सा, उद्योग, तकनीकी, कृषि यहाँ तक कि शिक्षा में भी इन विमर्शों ने अपनी जगह बनाई है यह विडम्बना ही है कि राष्ट्र की भाग्यलिपि को लिखने वाले युवाओं पर कोई सार्थक विमर्श अब तक प्रारम्भ नही हो सका है लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से एक ऐसे अछूते और विलक्षण विषय की ओर हम सभी का ध्यानाकर्षित किया है जिसकी और कथाकारों की दृष्टि अभी तक नही गयी है।

'बिगडैल बच्चे' कहानी मे एक और जहाँ कल्पना, शीलता, भावुकता व मार्मिकता है तो वही संशय, द्वंद्व और प्रश्नाकुलता भी दिखाई देती है कहानी के पूर्व में पुरानी पीढी की इस अवधारणा पर अवस्थित है जो आज की पीढी के बच्चों मे समझदारी, सामाजिक मूल्यों और संस्कारो का नितान्त अभाव है वे दिन पर दिन निहायत ही बदतमीज होते जा रहे है भोगवाद और भौतिकवाद मे सर से पांव तक रंगे आज के युवा महास्वार्थी है लेखिका अपनी बेटी को लिवाने जयपुर जा रही है उन्ही के कम्पार्टमेंट मे उनकी सामने वाली बर्थ पर गोवा के लेखिका की बगल वाली बर्थ पर एक दंपति भी यात्रा कर रहे है पति डॉक्टर तथा पत्नी अध्यापिका है। अपनी इस यात्रा के दौरान लेखिका तीनों बच्चों की वेशभूषा, भाषा, व्यवहार तथा हाव – भाव को देखकर खींजती है। लेखिका और सहयात्री दंपति युवा पीढी को कोसते और उनकी आलोचना करते है और पुरानी पीढी से उनकी तुलना करते है इससे पहले लेखिका कोई निर्णय ले पाती कहानी के उत्तरार्द्व तक आते आते कथानक मे अचानक ही तीव्र मोड आता है जिससे लेखिका की युवा पीढी के प्रति बनाई हुई अवधारणा खंडित हो जाती है तथाकथित 'बिगडैल बच्चे' जिनको आधार बना कर युवा पीढी का विश्लेषण किया गया है, परिस्थिति के अनुसार अपनी मौज – मस्ती को छोडकर आशातीत समझदारी का प्रदर्शन करते हुए घायल लेखिका को उनके गंतव्य तक सुरक्षित पहुचांने भी जाते है जबकि डॉक्टर दम्पति कोई भी सहायता न करते हुए वहाँ से खिसक जाते है पुरानी पीढी के लोग जो स्वयं सभ्य, सुसंस्कृत होने का तथा मूल्यों व आदर्षो को वहन करने का अभियान और अभिनय मात्र करते है मूल्यों और आदर्शों का मुखोटा लगा कर खोखले दावे करने वाले बडे लोगो से तो खुली सोच और साफ हृद्य वाले आज के युवा कही ज्यादा अच्छे है। इस कहानी मे भारतीय परम्परा और आधुनिकता के सन्दर्भो में युवाओं के साथ – साथ पुरानी पीढी के सांस्कृतिक क्षरण का नए सन्दर्भो में पुर्नमूल्यांकन के साथ ही उसके विभिन्न पक्षों का बेहतरीन विश्लेषण किया गया है जिससे किसी भी धर्म, काल और संस्कृति से मानवीयता जैसे शाश्वत मूल्य और आदर्श का कोई सम्बन्ध नही है नैतिकता, मर्यादा, अनशासन निष्ठा और कर्त्तव्य के प्रति लगन की भावना प्रायः निष्प्राण सी हो गयी है जो पुरानी पीढी के लोगो मे भी दिखाई देती है।

''सभ्यता तथा संस्कृति मे परिवर्तन अवश्यम्भावी है उसके अनुसार इन्सान में भी परिवर्तन आ जायेगा। इसलिए आगे का कार्य तय है इस दृष्टि से अनन्तिम सोच और खोज जीवन को आत्मबल और गतिशीलता प्रदान करती है साथ ही वे इन्सान को विनयपूर्ण रखती है।''[10]

''शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता होती है। वह एक ऐसा महत्वपूर्ण साधन है जो किसी भी राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति को दृढ़ बनाता है''[11] प्राचीन समय से ही शिक्षा का विशेष महत्व है कुरजां कहानी में मनीषा जी ने एक ओर जहाँ 'कुरजाँ' के बच्चे जुगनू का धार्मिक पाखण्डों, बाह्यआडम्बरों के कारण शिक्षा से वंचित रहना बहुत प्रयत्न करने के बाद भी कुरजां अपने बच्चे जुगनू का गाँव के स्कूल में दाखिला दिलाने में असमर्थ रहती है स्थानीय प्रशासन की मिलीभगत से ही ये सब सम्भव हो पाता है कुरजां एक एकाकी, उपेक्षिता कहानी की नायिका का संघर्ष व प्रताड़ना से भरी जीवन यात्रा है साथ ही इस कहानी मे गांवों की साधनहीनता, पिछडापन, सदियों की अज्ञानता व दब्बू मानसिकता, अन्धविश्वास के संत्रास झेल रहे वहाँ के लोगों के संघर्षशील जीवन का व्याख्यान है।

रेगिस्तान के इलाके की हकीकत को दर्शाती हुई कहानी बहुत ही मर्म – स्पर्शी है इस कहानी में मनीषा जी ने दलालों की हकीकतों को बखूबी उजागर किया है कुरजां जैसी महिलाओं की स्थिति आज भी ऐसी रही है जो उनकी गरीबी के कारण डायन बनाकर सजा दी जाती है जिसके कारण जुगनू जैसे बच्चों का बचपन बेकार हो जाता है। कहानी में गांवो के सीध – सादे लोगों का जागीदारों के द्वारा शोषण का सजीव चित्रण किया गया है। वर्तमान भारत में धर्म की आड़ में व्यभिचार, भोग – विलास, अनैतिकता और आर्थिक लूट – खसोट होती दिखाई देती है। ये सब जघन्य कृत्य करने वाले मन्दिर के मंहत, मठाधीश, स्वामी, साधूबाबा, पंडे, पुजारी ही होते है प्राचीन भारत की सभ्यता – संस्कृति का हो या वर्तमान भारत की सभ्यता व संस्कृति का आज भी अनेक प्रकार की विकृतियाँ परिलक्षित होती है, जिन्हे मनीषा जी ने अपनी कहानियो मे अभिव्यक्ति दी है। ''व्यक्ति का हित समाज के अधीन है परन्तु इसका यह अर्थ नही कि व्यक्ति सामाजिक रूढ़ियों और अन्ध – विश्वासों का अनुगमन करता जाए। मनुष्य ने संसार को सब वस्तुओं की अपेक्षा जटिलता द्वारा आकीर्ण बना दिया है वह अशेष तन्त्र–मंत्र, कृत्रिम क्रिया धर्म, जटिल, द्वैतवाद, विचित्र कल्पनाओं से ऐसा दुर्गम हो उठा कि

मनुष्य की उस स्वकृत अंधकारमय जटिलता के भीतर नए – नए सम्प्रदायों की सृष्टि होने लगी।''[12]

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी कुरजां एक ऐसी पुष्ठभूमि की कहानी है जिसमे देश के पिछडे विशेषकर ग्रामीण श्रेत्रों मे आज भी यह देखने को मिलता है जहाँ कही वे कुरजां है कही डाकण, और कही डायन। कुरजां को गांवो के बाहर अकेले अपने बच्चे के साथ संघर्षशील जीवन जीने के लिए कैसे गांवो के धर्माधिकारियों द्वारा विवश किया जाता है कहानी में लेखिका ने आधुनिक भारतीय धार्मिक स्थिति व 21वीं सदी के आने पर भी विशेषकर राजस्थान के ग्रामीण इलाके के धार्मिक कुरीतियों का वर्णन किया है धार्मिक शोषण करने वाले लोग अनेक प्रवंचनो के द्वारा लोगो को व्यग्र करते है।

'फांस' कहानी मे लेखिका ने एक स्त्रीवादी विमर्शकार के रूप में लैंगिग विभाजन का विरोध किया है ''मानव का सामुदायिक जीवन वर्ग, जाति, लिंग व भाषा के भेदभावों के उपर है इस तरह नर – नारी से समान व्यवहार करने का संवैधानिक ऐलान नर – नारी की लिंग समानता को लेकर नही, मनुष्यत्व को लेकर है इसलिए सरकारी पद्धतियों मे स्त्री व पुरूष के समान लिंग समानता को लेकर जो योजनाएं तैयार की जाती है वे ठीक नही होती समाज मे लिंग के नाम पर होने वाले सभी प्रकार के भेदभावों व अत्याचारों को रोकने के सिलसिले मे लिंग – संवेदना की जरूरतों पर चर्चा मिलती है शंका नही है कि जिस समाज में लिंगाधिपत्य की मजबूत व वर्चस्ववादी परम्परा जारी है वहां की सरकारी व सार्वजनिक योजनाओं को लिंग – संवेदित होना चाहिए''[13] सामाजिक न्याय की बरकरारी ओर देष की धार्मिक, सभ्यता व संस्कृति के लिए यह बेहद जरूरी है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ ने 'फांस' कहानी मे चार्ल्स डार्विन के सिद्वान्त 'विकासवाद' का सुन्दर उदाहरण यहां प्रस्तुत किया है कि ''प्रकृति क्रमिक परिवर्तन द्वारा अपना विकास करती है। डार्विन के अनुसार सभी प्रजातियां मूलरूप से एक ही जाति की उत्पत्ति है परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को ढालना की विवशता प्रजाति विविधता को जन्म देती है।''[14]

'फांस' कहानी में अंतिमा के रूप मे 'चौथी' कन्या का जन्म तो जैसे समाज मे एक मध्यमवर्गीय परिवार पर कहर बरसना हुआ लडके की चाह मे पिता का अपनी पत्नी व बेटी से मुँह मोडना बेटी के साथ नाजायज दैहिक सम्बन्ध बनाना एक तरह से भारतीय समाज की सभ्यता व संस्कृति पर करारा प्रहार है जिसके छीटे कई घरों की दिवारों पर देखें जा सकते है।

'स्यामीज' कहानी में लेखिका ने मानसी व रूपसी के आपसी अर्न्तद्वंद्व के साथ–साथ लहरों के राजहंस (माहन–राकेश) का उदाहरण पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है जिसमें स्यामीज कहानी की तरह सांसारिक सुखों और आध्यात्मिक द्वंद्व है इस द्वंद्व का एक दूसरा पक्ष ''स्त्री और पुरूष के पारस्परिक सम्बन्धों का अन्तर्विरोध है जीवन के श्रेय ओर प्रेय के बीच एक कृत्रिम और आरोपित द्वंद्व है जिसके कारण व्यक्ति के लिए चुनाव कठिन हो जाता है और उसे चुनाव करने की स्वतन्त्रता भी नही रह जाती ठीक ऐसा ही स्यामीज कहानी की मानसी, रूपसी के जीवन का सच है जिसमें स्त्री मन और तन पर लाद दिए गए इस बोझ को हटा फेकने की एक अदभूत हिम्मत और बेचेनी इस कहानी में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है लेकिन विडम्बना यह है कि इस नैसर्गिक इच्छा को व्यक्त करने तक की स्वतन्त्रता स्त्रियों को नही है।''[15] मानसी व रूपसी तन और मन को धर्म और नैतिकता की धर्मपेटियों मे बांध कर रखने वाला पुरूष समाज उसे आनन और भोग के साधन से ज्यादा कुछ नही मानता ओर स्त्रियों ने भी उनकी इस ष.ड्यन्त्रकारी कृतकार्य में उनकी सहायता की है और वो खुद को भी इसी दृष्टि से देखने लगी है।

अंतिम कहानी 'गन्धर्व गाथा' कहानी में लेखिका ने एक ऐसे प्रेम की अभिव्यंजना की है जिसमें प्रेम पूरी तरह से मौन है जिसमे प्रेमी नायक की स्थिति गन्धर्व सी लगती है। ''गन्धर्व पौराणिक साहित्य मे गन्धर्वो का एक देवोपम जाति के रूप में उल्लेख हुआ है नारियों के प्रति उनका विषेष अनुराग था उनके उपर वे जादू का सा प्रभाव डाल सकते थे''[16] इस कहानी में प्रेम की अभिव्यक्ति भारतीय सभ्यता व संस्कृति का आदर्श प्रस्तुत करती है।

उपसंहार

मनीषा जी के कथा – साहित्य मे व्यक्ति के सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव का जब हम विश्लेषण करते है। तो उसमें धर्म और नैतिकता अपने उच्चतम रूप में सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का ही अनुशीलन प्रतीत होता है। कानून, प्रथा या शोभाचार ही सामाजिक नियन्त्रण के साधन नही है, अपितु इन सबसे महत्वपूर्ण धर्म एवं नैतिकता है जो इन सबको प्रभावित करते है ये सर्वाधिक प्रभावषाली मार्गदर्शक भी है। यह व्यक्ति के व्यवहार को पुण्य की ओर प्रेरित करते है। परन्तु धर्म और नैतिकता के सम्बन्धों में भी नैतिक आचार का बढ़ता हुआ पृथकत्व दिखाई पड़ जाता है नैतिक दायित्व में एक ओर तो मानव के लिए बाहरी बन्धन की भावना होती है और दूसरी ओर स्वाभाविक रूप से न मानने का भाव होता है भारतीय जीवन में मूल्यों, प्रतिबन्धों तथा व्यवहार के नियमों के नियन्त्रण द्वारा व्यक्ति को अपना जीवन उच्च बनाने व उसके द्वारा अपने सामाजिक स्तर को प्राप्त करने की प्रेरणा दी जाती है।

मनीषा जी ने वर्तमान युग की संस्कृति के विघटनकारी तत्वों को इस प्रकार बेनकाब किया है जो पाठक को वर्तमान संस्कृति के सन्दर्भ मे सोचने के लिए मजबूर कर देता है और इसी में साहित्य की सफलता और सार्थकता निहित है हिन्दू धर्म के प्रचलित स्वरूप को मनीषा जी ने भारत की साधारण जनता की मुक्ति व विकास मे एक बहुत बडा अवरोध माना है इसके लिए वे पण्ड़ित – पुरोहित और इनके द्वारा प्रचारित धार्मिक – सामाजिक कर्मकाण्ड़ो को भारतीय समाज का सबसे बडा कोढ़ मानती है इससे बहुत सारी सामाजिक कुरूतियों, जाति–पाति, छुआछुत, ऊँच – नीच की भावना के साथ ही अनेक प्रकार की रूढ़ियों, अंधविश्वासों तथा अज्ञान पर आधारित मान्यताओं को बल मिल रहा है।

संदर्भ

1. डॉ० अजय के० पटेल, नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों मे युग चेतना, चिन्तन प्रकाशन हंसपुरम् – कानपुर – 208021, संस्कार प्रथम सन् 2007, पृष्ठ – 195
2. प्रो० मीना एन० पटेल, हिन्दी काव्य मे सांस्कृतिक चेतना, चिन्तन, प्रकाशन, हंसपुरम्, कानपुर – 208021, प्र० संस्करण : 2011, पृष्ठ – 2
3. डॉ० अजय के० पटेल, नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों मे युग चेतना, चिन्तन प्रकाशन हंसपुरम् – कानपुर – 208021, संस्कार प्रथम सन् 2007, पृष्ठ – 224
4. प्रो० मीना एन० पटेल हिन्दी काव्य मे सांस्कृतिक चेतना, चिन्तन
5. प्रकाशन, हंसपुरम्, कानपुर – 208021, प्र० संस्करण : 2011, पृष्ठ – 7
6. मनीषा कुलश्रेष्ठ 'गन्धर्व – गाथा', सामयिक प्रकाशन 3320
7. – 21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, प्र० संस्कार – 2012, पृष्ठ – 13
8. मनीषा कुलश्रेष्ठ 'गन्धर्व – गाथा', सामयिक प्रकाशन 3320
9. – 21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, प्र० संस्कार – 2012, पृष्ठ – 27
10. bloggersitabdiyara.blogspot.com/……/blog-post_Z2….

11. डॉ० अजय के० पटेल नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों मे युग चेतना,
12. चिन्तन प्रकाशन हंसपुरम् – कानपुर – 208021, संस्कार प्रथम सन् 2007, पृष्ठ – 259
13. pustak.org/books/bookdetails/2812
14. प्रमीला के० पी० स्त्री : यौनिकता बनाम अध्यात्मिकता,
15. राजकमल प्रकाशन, प्रा० लि० नई दिल्ली – 110002, प्र० संस्करण : 2010, पृष्ठ – 7
16. डॉ० अजय के० पटेल नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों मे युग चेतना,
17. चिन्तन प्रकाशन हंसपुरम् – कानपुर – 208021, संस्कार प्रथम सन् 2007, पृष्ठ – 238
18. डॉ० आदर्श बाली (दत्त) गोविन्द बल्लभ पंत के कथा – साहित्य मे
19. व्यक्ति और समाज अंकुर प्रकाशन, न्यू गुप्ता कॉलोनी, दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2012, पृष्ठ – 169
20. प्रमीला के० पी० स्त्री : यौनिकता बनाम अध्यात्मिकता,
21. राजकमल प्रकाशन, प्रा० लि० नई दिल्ली – 110002, प्र० संस्करण : 2010, पृष्ठ – 15
22. http://hi.m.wikipedia.org/...../ pkYlZ--------
23. Bharatdiscovery.org/india/xU/koZa